

## ॥ श्रीपांत्रीश वोलनो थोकमो प्रारंजः ॥

१ पहेंले वोले नरकगति, तिर्यंचगति,मनुष्यगति स्रने देवतानीगति ए चार गति जालवी ॥

श्र वीजे वोले एकेंडिय जाति, वेइडिय जाति, वेंडिय जाति, चौरिडिय जाति खेने पंचेंडिय जाति ए पाच जाति जाणवी ॥

३ त्रीने बोते ए॰गीकाय, व्यवकाय,तेन्नकाय,वायु काय,वनस्पतिकाय थ्यने त्रसकाय ए नकाय जाणवी॥

ଧ चोथे बोले श्रोत्रेडिय, चक्करिडिय, घार्णेडिय, रसेडिय, श्रने स्वक्षेंडिय ए पाच इंडिय जाण्दी ॥

प पांचमे बोते आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, ईडिय पर्याप्ति, आसोब्धास पर्याप्ति, ज्ञापा पर्याप्ति अने मनः पर्याप्ति ए ठ पर्याप्ति जाणवी ॥

६ ठठे वोले पांच इंडिय तथा मनवल, वचनवल अने कायवल ए त्रण वल एवं थ्राठ थ्यने नवमो श्वा सोह्यास तथा दशमुं श्रायु ए दश प्राण जाणवा ॥ आहारक शरीर, तेजस शरीर छाने कार्मण शरीर ए पाच शरीर जाणवा त

पाच इरिर जाणवा तै

प व्यातमे बोले सत्यमनोयोग, ब्रास्त्य मनोयोग,

पिश्र मनोयोग, अने व्यवहार मनोयोग ए मनना
चार योग तथा सत्य वचनयोग, श्रास्त्य वचनयोग,

मिश्र बचनयोग खने व्यवहार वचनयोग ए चार

वचतना योग तथा श्रोदारिक काययोग, श्रोदारिक मिश्र काययोग, बैक्रिय काययोग बैक्तियमिश्र काय योग, श्राहारक काययोग, श्राहारक मिश्र काययोग श्रोने कार्मण काययोग ए सात कायाना योग एव स वैमली पन्नर योग जाणवा ॥

ए नवमे वोक्षे मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन पर्यवज्ञान श्रुते केवलज्ञान एव पाच्ज्ञान तथा मतिश्रज्ञान,श्रुतश्रज्ञान श्रुने विज्ञान एव त्रण श्र ज्ञान तथा चक्रदर्शन, श्रुचक्रुदर्शन, श्रविष्टर्शन श्रने

क्वान तथा चक्तुदर्शन, श्रवशुदर्शन, श्रवधिदर्शन श्रने केंबलदर्शन एवं चार दर्शन मली बार उपयोग ॥ १० बहामे घोले झानावरणीय कर्म, दर्शनावर णीय कर्म, वेदनीय कर्म, मोहनीय कर्म, श्रायुकर्म, नामकर्म, गोत्रकर्म श्रने श्रतराय कर्म ए श्रायु कर्म॥ ११ अगीआरमे वोले मिध्यात्व ग्रुषानाणु आईश दन ग्रुषानाणु मिश्र ग्रुषानाणु, अविश्वतन्यक्दृष्टि . ग्रुषानाणु, दश्चिरति ग्रुषानाणु, प्रमत्त ग्रुपानाणु, प्रप्रमत्त ग्रुपानाणु, विवृतिवादर ग्रुपानाणु, अनिवृत्तिवादर ग्रुपानाणु, अपित्रात्तिवादर ग्रुपानाणु, व्यवातामोह ग्रुपानाणु, होषानोह ग्रुपानाणु, सोषानोह ग्रुपानाणु, सोषानोहेवली ग्रुपानाणु, अने अयोगीकेवली ग्रुपानाणु ।।

अने अयोगीकेवां गुणगण एव चार गुणगणा ॥
११ वारमे वोले जीव शब्द, अजीव शब्द अने
मिश्रक्षद ए त्रण विषय ओर्जेडियना ठे तथा कालो,
नीलो, पीलो, रातो अने घोलो ए पाच विषय चक्कुरिं
डियना ठे तथा सुरित्तगध अने छुर्चिगध ए वे विषय
प्राणेडियना ठे तथा कम्बो, कपायलो, लाटो, मीठो
अने तीलो ए पाच विषय रसेडियना ठे तथा सुवालो, लरखरो, ह्यबो, नारे, शीत, उप्ण, लूलो अने
चोषमधो ए आठ विषय स्पशैंडियना ठे एवं सर्व मली
पाचे इंडियना त्रेवीश विषय जाणवा॥
१३ वेरमे वोले जीवने स्वजीव स्परी क्यांके ते

रेरे तेरमे वोछे जीवने अजीव करी आये ते मिथ्यात्व, अजीवनें जीव करी जाणे ते मिथ्यात्व, धर्मने अधर्म करी जाणे ते मिथ्यात्व, अधर्मने धर्म करी जाणे ते मिथ्यात्व, साधुने असाधु करी सदहे ते मिथ्यात्व, असाधुने साधु करी सदद्दे ते मिथ्य' सवरताव सेवन रूप मोक्तमार्ग तेने छन्मार्ग करी सदद्दे ते मिध्यात्व, विषयादि सेवनरूप वनमार्ग ते मोक्तमार्ग करी सद्दे ते मिन्याख, वायरो रूपी पदार्थने अरूपी करी सददे ते मियात्व, मोठा

दिक श्ररूपी पदार्थने रूपी करी सहहे ते मिध्यास्व ए

दश प्रकारना मिथ्यास्य जाणवा ॥ २४ चोदमे बोखे नव तस्वना जाणपणा विषे पुकशोने पन्नर बोल धारवा ते कहे वे ॥प्रथम जीव तत्वना चीद बोख कहेठे एक सृहर एकेडिय, बीजा बादर एकेंडिय, त्रीजा बेडिय, चीथ

बेंडिए, पाचमा चर्गरेडिए, रहा अस्ति पेचेंडिए अने सातमा सन्नि पर्वेडिय, ए सात जातिना जीव व तेने एक पर्याप्ता अने बीजा अपर्याप्ता एम वे वे जे करता चौद जेद जीवना थाय है॥

॥यीजा श्रजीवतत्वना चौट बोल कहेरे धर्मास्टि कायनो खंध,देशश्रनेप्रदेश ए त्रण जेदतयो श्रधर्मास्टि कायना खध, देश श्रने प्रदेश ए त्रण नेद तथा आक शास्तिकायनो खध, देश अने प्रदेश ए त्रण जेद अ

काखड्यमो एकज नेद एव दश नेद श्ररूपीश्रजीवन

वया तेनी साथे पुजञ्जना खंब, देश, प्रदेश व्यने परमार्खे ए चार जेदरुपी हे ते मेखबता चीद जेद थाय है ॥

॥ पुरुष नव प्रकारें वंधायहे ते नव जेद खिल्पें हैवे श्रज्ञपुषे, पाषपुषे, खेणपुषे, तेषपुषे, वहपुषे, मनपुषे, वयपुषे, कायपुषे श्रने नमस्कार पुषे एवनव ॥

॥ पाप श्रहार प्रकारे बंधाय ठे ते खलीये ठेवें प्राणातिपात, मृपावाद, श्रदत्तादान, भेशुन, परिप्रह, क्रोध, मान, माया, खोन, राग, द्वेर, कलह, श्रदया स्यान, पेशून्य, रत्ति श्ररति, परपरिवाद, माया मृरा

वाद, िन्यात्वशह्य एवं श्रहार जेद यया॥

॥ श्राश्रव वोश प्रकारे कहे हे १ मिय्यात्वाश्रव, ए
श्रवताश्रव, ६ प्रमादाश्रव, ४ कपायाश्रव ए योगाश्र व, ६ हिसा करवी ने प्राणातिपाताश्रव, ७ मृयावादा

श्रवताश्रव, इ प्रमादाश्रव, ध कपायाश्रव ए यागाश्र व, ६ हिसा करवी ते प्राणातिपाताश्रव, छ मृयावादा श्रव, ए चोरी करवी ते श्रदत्तादानाश्रव, ए कुझीला श्रव, १० परिमह राखवु ते परिमहाश्रव, श्रोतेंडि

अन, १० परिमद्द राखनु त परिमद्दाश्चर, आजाड यने मोकवी राखे ते श्रोत्रेडियाश्रव, १२ चर्कुरिडि यने मोकवी राखे ते चर्कुरिडियाश्रव, १३ प्रार्थेडि यने मोकवी राखे ने प्रार्थेडियाश्रव, १४ रसेंडि-यने मोकवी राखे ते रसेंडियाश्रव, १५ स्वर्गेडियने मोकवी राखे ते स्पर्गेडियाश्रव, तेमज मनादिक श्रे एाने मोकला राखे ते १६ मंनाश्रव, १९ वर्चनाश्रव, श्रने १० कार्याश्रव, १ए जमोपकरएखेवा मूकवानी श्रजयंथा करे ते जमोपकरएाश्रव, १० सुचिक्रसंग सेर्वनकरे ते कुसंगाश्रव एव वीश जेद थया॥

॥ संवरना वीश जेद कहेंछे १ समकीत सवर, १ वतपञ्चरकाण सवर, ३ अप्रमाद संवर, ४ अकपाय

संवर, ए ख्योग संवर, ६ प्राणातिपात सवर, ९ मृ पावाद न बोले ते सवर, ए खदत्त न खोपे ते सवर, ए मेथुन न सेवे ते सवर, १० परियद्द न राले ते सवर, ११ श्रोवेंडियने वश करे ते सवर, ११ चर्क्कीरेडियने वश करे ते सवर, १३ मार्णेडियने वश करे ते सवर, १ए स्परोडियने वश करेते सवर, १६ मन वश करे

काय वश करे ते काय सबर, रूप स्रकेषकरणनी श्र जयणा न करे ते सबर, २० सुचि कुसंग न सेवे ते संबर ॥

तेमन सबर, १७ वचन वश करे ते वचन संवर, १०

॥ निर्क्तराना बार जेद कहे हे, १ व्यनशन तप, २ ऊषोदरी तप, ३ वृचिसकेप तप, ४ रसत्याग तप, ए कायक्वेश तप, ६ सखीनता तप, ७ प्राधक्षित तप, उ विनय तप, ए वयावृत तप, १० सङ्गाय तप, ११ ध्यान तप, ११ कायोरसमें तप, एव बार ॥

११ च्यान तप, १२ कायातम तप, एव पार ॥ ॥ वंध तत्त्वना चार जेद कहे ठे प्रकृति वंध, स्थि ति वंध, खनुजाम वध अने प्रदेश वंध एव चार थया॥

॥ मोक तत्त्वना चार नेद कहें हे एक ज्ञान, वीजो दर्शन, त्रीजो चारित्र छने चायो तप ए नव तत्त्वना जाणपणा ब्राश्रयी एकसोने पत्तर वोल कहा। ॥ १५ पत्ररमे वोले इत्यारमा, क्यायारमा, योगात्मा,

१५ पत्ररमे वोते इन्यातमा, कपायातमा, योगातमा, इपयोगातमा, कानातमा, दर्शनातमा, चारित्रातमा खर्ने वीर्यातमा ए खाउ प्रकारना खात्मा कहा है ॥ १६ शोलम बोले १ खसुरकुमार, २ नागकुमार,

३ सुवर्णकुमार, ४ विद्युस्त्रमार, ए अन्निक्रमार, ६ दीवकुमार, ७ दिशाकुमार, ० उद्धिकुमार, ए स्त नितकुमार, १० वायुकुमार ए दश जुननपतिना दश दक्त तथा सात नारकीनो एक द्कक तथा एथ्यो काय, अपकाय, तेजकाय, वाजकाय अने वनस्यति

काय, ख्रवकाय, तेनकाय, वानकाय ख्रेन वनस्ति काय ए पाच यावरना पाच दमक तथा वेद्धिर, तेद्धि य छाने चन्नेरेडिय ए त्रण विक्रवेदियना त्रण दमक एवं नेगणीश थपा छाने वीशामुं तिर्थंच पर्चेडियनुं, एकवीशमु मनुष्यनुं, वावीशमुं व्यत्रिक देवोनु, त्रे वीशमु ज्योतिषी देवोतुं अने चोवीशमुं वैमानिक देवोनु एवं चोवोश दमक जाणवा ॥ १४ सत्तरमें बोले कृष्ण लेखा नील लेखा का पात लेखा, तेजालेश्या, पदालेश्या छाने शुक्क लेख्या य छ सेइया जाणवी ॥ १० छडारमे बोजे मिध्वाहष्टि, समिन्या एट खे निश्रदृष्टी अने समकोतदृष्टि ए त्रण दृष्टि जाणारी रए रंगणीशमे बोजे स्मार्चप्यान, रोडप्यान, धर्म ध्यान अने शुक्कभ्यान ए चार ध्यान जाणवा ॥ २० वोशमें बोले धर्मास्तिकायादि व डह्य वे तेरे त्रीहा बोजे जनमीय ते कहे हे निहा प्रयम धर्मास्ति काय डब्य ते डब्ययकी एक डब्य, क्रेत्र थकी चीदरा ज लोक प्रमाण, मात थहा श्रादि खंत रहित, जाव थकी श्ररूपी, गुणवकी जीवपुत्रतने चालवान सहाय आपनार, ए पाच बोले धर्मास्तिकायने जेलखीचे॥ ॥ अधर्मास्तिकाय पण झब्बयकी एक झब्ब, के त्रयभी चौदराज लोक प्रमाण, कालयको अनादि श्चनत, जावयको ब्रह्मी श्चने ग्रुणय ही हियर रहेना रने सहाय श्रापनार ए पाच बोखे उंखलीये ॥

व्याकाशास्तिकाय प्रव्ययकी एक प्रवय क्षेत्रय

( ए ) की द्वीकालोक प्रमाण, काल यकी खनादि खनंत, जावधकी खरूपी खने गुणधकी खनकाश खांपनार ए पाच बोले डीलखीये॥

॥ कालप्रव्य प्रज्ययकी एक प्रव्य, केन्नयकी खढीष्ट्रीय प्रमाण,कालयकी खनादि खनंत,नावयकी अरूपी,गुणयकी वर्त्तना लक्षण ए पाच बोले उंत्रखीये

॥ पुनलास्तिकायद्भव्यः द्रव्ययकी अनंता द्रव्यक्ते त्रयकी चीदराजलोक प्रमाण,कालयकी अनादि अनत, नावयकी रूपी अने ग्रणयकी पूरण गलन, सक्ल पक्षण, विश्वंतण लक्षण, ए पाच वोले जेललीये ॥ ॥जीवास्तिकायद्भव्य द्रव्ययकी अनंताद्भव्य, के त्रयकी चौदराजलोक प्रमाण कालयकी अनादिश्रमंत, नावयकी अरूपी अने गुणयकी चेतन गुण लक्षण, ए पाच बोले जललीये एव सर्वभली त्रीश बोल यथा ॥

२१ एकवीशमे वोले एक जीवराशि अने वीजी

२२वावीशमें वोबे आपकना वारवत कहें विहां पहेंचे बते व्यक्तजीवने हुए नही छने स्थावर जीवनी मर्थादा करे, वीजे बते पाच मोटका जुट वोबे नहीं, त्रीजे बते मोटकी चोरी करे नहीं, चोले बते परस्री

श्वजी रराशि ए वे राशि जालवी ॥

वतें परिम्रह्मी मर्योटा करे, ठठे वते दिशिमी मर्यादा करे, सातमे वते पन्नर कम्मीदाननी मर्यादा करे, आठ मे वते अनर्थ देमनी मर्यादा करे, नवमे वते सामायिक करे, दशमे वते देशावकाशिक करे, अगीआरमे वते पो सह उपवास करे, वारमे वने साधु मुनिराजने सूजतो शुद्ध आहार पाणी आरे, एव वार वत जाणवा ॥

23 प्रेबीशमे बोखे साधुना पाच महावन कहें के साधुजी, मने वचने कायाये करी कोइ जीवने सर्वथा प्रकारे पोते हुँचे नहीं, हुंखांवे नहीं खने हुंखांते रुद्धें जाणे नहीं ते प्रथम प्राणातिपात विरमवन जागतुं

मसाधु महाराज, मने वचने कायाये करी सर्व या प्रकारे पोते जुटुं बोले नही, बी बाने जुटुं बोलावे नहीं धने जुटु बोलताने रुकुं जाये नहीं ते बी जु मृ पावाद विरमण बत जायु ॥

॥ साधुजी मने वचने कायाये करी सर्वया प्रका रे गोते चोरी करे नहीं, बीजा पासे करावे नहीं खने करता प्रत्ये अनुमोदे नहीं ते त्रीजु अदचादान विर मणानत जाणजु ॥ ॥ साधुजी, मने वचने कायाये करी सर्वया प्रकारे मेथुन पोते करे नहीं, बीजा पासे करावे नहीं, अने करताने रुष्ठं, जाये नहीं ते चोधुं ब्रह्मचयनत्॥

॥ साधुजी, मने वचने कायाये करी सर्पथा पोते परिग्रह राखे नही, बीजाने रखाव नही, अने राखताने रूफु जाले नहीं ते पांचमु परिग्रह विरम्ण वत ॥

ँ ॥ इवे ए पांच महावतना जांगां कहे वे ॥ ॥ पहेला प्राणातिपात विरमण वतना जांगा एम्याशी थाय ते कहे वे. ए एथीकायने हणे नहीं, हणांवे नही श्रने हणताने

ए पृथ्वीकायने हुणे नहीं, हुणावे नहीं अपने हुणताने कुं जाणे नहीं तेना मन, वचन अपने काया प् त्रण योगे करो नव जागा थाय-

ए अपकायने हुणे नहीं हुणावे नहीं अने हुणताने रुमुं जाये नहीं मन, वचन, कायाये करी ए तेतकायने हुणे नहीं, हुणावे नहीं अने हुणताने

रुर्तुं जाणे नहीं मन, बचन अने कायाये करो.

ए वायुकायने हुणे नहीं, हुणावे नहीं अने हुणताने

रुषु जाणें नहीं मन, वचन श्रने कायाये करी ए वनस्पतिकायने हुणें नहीं, हुणावें नहीं, हणताने रुषु जाणें नहीं मन, वचन श्रने कायाये करी. (,१घ)

ए वे इडियने हुए। नहीं, हुणावे नहीं अने हुणताने रुद्ध जाणे नही मन, वचन श्रने कायाये करी 🕻 ए त्रेंडियने हुए नहीं, हुए। नहीं अने हुएताने रु हु जाणे नही मन, वचन अने कायाये करी ए चौरिडियने हुए नहीं, हुणावे नहीं अने हुलताने

रुद्धं जाले नही मन, वचन अने कायाये करी ए पंचेंडियने हुणे नहीं, हणावे नहीं अने हणताने रुकुं जाणे नहीं मन, वचन अने कायांथे करी

बीजा मूपवाद विरमण वतना जागा नत्रीश याय ते कहे ने ए कोधना आवेशयी अतल बोखे नई।, बोलावे न

ही, बोलनाने रून जाणे नही सन, वचन कायाथी ए हास्ययो जुठु वोले नही, बोलारे नही खने वोल ताने रुद्ध जाए। नही, वचन अने कायाये करी

ए जययो जुद्र बोले नही, वोलावे नही, बोलताने रुद्ध जाणे नही मन, वचन श्रने कायाये करी

ए खोजयी जुद्ध वोले नही, वोलावे नही, वोलताने रुंड जाण नहीं मन, वचन खने कायाये करी

( १३ )

त्रीजा अदत्तादान विरमणवतनाः त्रांगा के विषय

्योपन थाय ते कहेंटे.

ए खटन चोरी करे नहीं, करावे नहीं खने करताने

रुद्ध जाले नहीं मन, वचन खने कायाये करो

ए घणी चोरी करे नहीं, करात्रे नहीं अने करताने स्कु जाणे नहीं मन, वचन अने कायाये करी ए न्हानी चोरी करे नहीं, करावे नहीं अने करताने रुद्दें जाणे नहीं मन, वचन अने कायाये करो

ए महोटी चोरी करे नहीं, करावे नहीं, खने करताने रुनुं जाणे नहीं मन, वचन खने काषाये करी ए सचित्त वस्तुनी चोरी करे नहीं, करावे नहीं कर

ए सायत वस्तुना चारा कर नहा, कराव नहा कर ताने रुकुं जाणे नही मन. वचन, कावाये करी. ए छचित्र वस्तुनी चोरी करे नही, करावे नही, कर

ए छाचित्त वस्तुना चारी करे नहीं, करावे नहीं, क ताने रुकुं जाणे नहीं मन, वचन, कायाये करीं चोथा मैथुन विरमणवतना जागा सत्तावीश थाय ते कहे ठे

ए देवतानी स्त्रीने जोगवे नहीं, जोगवावे नहीं, जोग वताने रुक्त जाणे नहीं मन, वचन, कायाये करी ए मनुष्यनी स्त्रीने जोगवेनहीं, जोगवावेनहीं स्रते जोगवतानेरुक्त जाणेनहीं मन, वचनस्रतेकायायी

( 8%) ए तिर्यंचनी स्त्रोने जोगवेनही, जोगवावे नही खने जोगवताने रुष्ट्र जाले नही मन, बचन, कायाची ॥ पाचमा परिग्रह विरमण्डनना जागा चो पन थाय ते कहे हे ए घटन परिप्रह राखे नहीं, रखांचे नहीं, घने राखता ने रुमु जाणे नहीं मन, बचन, अने कायाये करी। ध घणो पित्रह राखे नही, रखावेनही अने राखताने रुष्ठु जाणे नही मन, वचन अने कायाये करी. ए न्हानो परिच्रह राखे नही, रखावे नही, अने राख ताने रुद्धं जाणे नही मन, वचन, अने कायाथी. ए महोटो परिग्रह राखे नहीं, रखावे नहीं, श्रने राख ताने रुकु जाणे नही मन, वचन, अने कायाथी ए सचित्र वस्तुनो परियह राखे नहीं, रखावे नहीं अने राखताने रुकुं जाणेन्हीमन,वचन,श्रने कायाथी. ए छचित्त वस्तुनो परिघह राखे नहीं, रखावे नहीं छ ने राखताने रुमं जाणे नहीं मन, वचन, वायायी. ।। एम ए पाचे महावतना मेखी १५२ जागा भया। १४ चोवीशमे वीले अतना जागार्चगणपद्याश कहेते. तिहा प्रथम एक करणने एक योगधी नव जागा था

(१५) उपते कहे हें १ मने करी कर नहीं. श्वाचने करी क रूं नहीं, श्वाचाये करी कर नहीं, श्वामने करी करा वं नहीं, श्वाचने करी करावुं नहीं, श्वाचाये करी

बु नहा, य वचन करा कराबुजाहा, ६ कायाय करा कराबुं नही, ९ मने करी श्रजुमोईं नही, ४ वचने क री श्रजुमोडु नही, ए कायाये करी श्रजुमोईं नही ॥ हवे एक करणने वे योगयी नव ज्ञांगा याय

ते कहे वे १ मने करी वचने करी कर्र नही, १ म-

ने करी कायाये करी करूं नहीं, इ वचने करी कायाये करी करूं नहीं, १ मने करी वचने करी करावु नहीं, ए मने करी कायाये करी करावुं नहीं, ६ वचने करी का-याये करी करावुं नहीं, ९ मने करी वचने करी अनु-मोछुं नहीं, ए मने करी कायाये करी अनुमोछु नहीं, ए वचने करी कायाये करी अनुमोहुं नहीं, ॥

हवे एक करणने त्रण योगयी त्रण जांगा थाय ते कहे हे १ मेने वचने अने कायाये करी कर्र नही, १ मने वचने अने कायाये करी करातु नही, ३ मने, वचने अने कायाये करी अनुमोहं नही ॥

ाहवे वे करण क्रने एक योगथी नव जांगा थाय ते कहे ते १ मनेकरी कर्र नहीं, कराबुं नहीं, २ वचने करी कर्र नहीं कराबुं नहीं, ३ कायाये क्री कर्र नहीं करावुं नही, धमने करी कर नहीं, अनुमोहुं नहीं ए व-चने करी कर नहीं अनुमोहु नहीं, ६ कायाये करी करुं नहीं अनुमोहु नहीं, धमने करी करावु नहीं अ-नुमोहु नहीं, ७ वचने करी करावु नहीं अनुमोहु न-हों, ए कायाये करी करावु नहों अनुमोहु नहीं।।

॥ हवे वे करण अपने वे योगथी नवनांगा याय ते कहे हे १ करुं नहीं कराबु नहीं मने करी वचने कर

२ केरु नहीं करांचें नहीं मने करी कायाये करी २ कर नहीं करांचु नहीं वचने करी कायाये करी ४ कर नहीं अनुमोर्जुं नहीं मने करी वचने करी, ८ कर नहीं अनुमोर्जुं नहीं मने करी कायाये करी ६ कर्र

ते कहें वे १ कर नहीं कराबुं नहीं मते करी वचने करित कार्यों करी, १ कर नहीं अनुमोज्ज नहीं मने करी वचने करी कायाये करी, ३ कराबुं नहीं अनु-मोज्जं नहीं मने करी वचने करी कायाये करी।। ( 53 )

॥ इवे त्रण करण अने एक योगयी त्रण नांगा याय ते कहे वे १ करुं नहीं कराबुं नहीं अनुमोछ नहीं मने करी, १ करुं नहीं कराबुं नहीं अनुमोद्धे नहीं बचने करी, ३ करु नहीं कराबुं नहीं अनुमोद्ध नहीं कायाये करी ॥

ह्वे त्रण करण श्राने वे योगयी त्रण जागा याय ते कहे हे १ करु नहीं करातु नहीं श्रानुमें छिं नहीं मनेकरी, वचनेकरी, १ कर्र नहीं करातुं नहीं श्रानुमें छ नहीं मने करी कायाये करी, ३ कर्र नहीं कर्रातुं नहीं श्रानुमें छ नहीं वचने करी, कायाये करी॥

॥ हवे त्रण करण श्रते त्रण योगथी एक जागो याय ते कहे ठे १ मने करी वचने करी कायाये करी कर्त नही करावुं नही श्रतुमोडुं नही ॥ ॥ सरवाले एक करणने एक योगयी नन, एक

करणने वे योगथी नव एक करणने त्रण योगथी त्रण तथा वे करणने एक योगथी नव, वे करणने वे योग-थी नव वे करणने त्रण योगथी त्रण तथा त्रण क-रणने एक योगथी त्रण, त्रण करणने वे योगथी त्रण अने त्रण करणने त्रणयोगथी एक एवं ४एनांगा यया।। २५ पत्रीसमे बोले पाच चारित्रनां नाम कहें हैं . सामायिक चारित्र, बीजो वेदोपस्थापनीय चारित्र त्रीजो परिहारविशुद्धि चारित्र, चोथो सृदम संपराय चारित्र छने पाचमो यथाख्यात चारित्र एव पाच॥ २६ व्हीशमे बोखे नैगमनय, संग्रहनय, व्यवहार नय, रूजुसूत्रनय, शब्दनय, समजिरूढनय छने एव

न्नूतनय ए सात नय जाणवा २९ सत्तावीशमे बोले नामनिकेप, स्थापनानि केप, इत्यनिकेप अने जावनिकेप ए चार निकेपी

जाणवा श्रवाबीहामे बोले जनसमसमिकत, कायोपहा मसमिकत,काथिकसमिकत,हास्वादनसमिकत श्रमे वेदक समिकत ए पाच समिकत जाणवा, ॥

१ए उंगणत्रीसमे बोखे श्रृगाररस, वीररस, करु खा रस, इस्यरस, रोडरस, जयानकरस छद्जूतरस विजस्सरस छने शातरस प नवरस जाणवा ॥

३० त्रीसमे वोले १ वक्तीर्पीप, २ पीपलनीर्पीपु ३ जंबरना फल, ४ पीपरीनीपीपु, ५ कद्भवरना फल ६ मधु, 9 मालण, ए मास, ए महिरा, १० हिर्

१९ विप ते छाफिल, सोमल प्रमुख, १२ करहा ते रो यमा १३ सर्व जातनी काची माटी, १४ रात्रिजोजन रे बहुवीज फल, १६ ध्वनंतमाय कंदम्ब फल, १९ वोमानु ध्वयाण, १० काचा गोरसमा करेला वमा, १ए वेंगण रींगणा, १० जेनु नाम न जाणता होइयें एवा ध्वजाएयां फल फूल, २१ तुइफल ते पणी बोर तथा कुछली वस्तु ध्वतंत काचां फल, तथा पी

व्हर्म पीचू प्रमुख १४ चिति रस ते संकेंद्वं अज्ञा दिक जेतु काल पूरो चयाची स्वाद वदृद्धं द्रोय, रस चिति यह गयुं होय ते एवावीश अज्ञह्य वर्क्षवा तेना नाम जाणवा ॥

३१ एकत्री हामे वोले एक उत्पानुयोग, वीजो गणि तानुयोग, त्रीजो चरणकरणानुयोग अने चोयो धर्म कथानुयोग ए चार अनुयोग जाणवा ॥ ३१ पत्रीहामे वोले एक देवतस्व, बीजो ग्रहतस्व

श्रने त्रीजो धर्मतत्त्व ए त्रण तस्त्र जाणवां ॥ ३३ तेत्रीशमे बोले काल, स्वजाव, नियत, पूर्वकृतते कर्मे श्रने पुरुषकार ते जद्यम ए पाच समवाय जाणवाः

३४ चोत्रीशमे वोले एक कियाबादीना एकसे। एंड्री नेद,वीजा श्रक्तियाबादीना चोराशी नेद,चीजा विनयवादीना वजीश जेद श्रने चोथा श्रक्तान वादी

विनयवादीना वजीश जैद खने चौथा खड़ान वादी ना समसठ जेद एरीवे चार प्रकारना पालंमीर्ज हे (१०) तेना सर्व मखी त्रणुको ने त्रेसठ चेद श्रीसूयगकाग सत्रयो जाणुना ॥

े ३५ पात्रारामे बोले श्रावकना एकवीश एण कही देखाने हे १ कुद्रमनि वास्रो न होय पण गन्नीर होय, १ पार्चेद्र स्वष्ट होय रूपवत होय एटले श्र

हाय, १ पाचे।ज स्वष्ट हाय रूपवत हाय ५८० अ गोपाग सपूरण होय, ३ सोम्यप्रकृति वाजो होय, स्वजावे व्यपाप कॉर्मे होय. ४ सर्वदा सदाचारी होय माटे सर्व जोकने बह्वज होय, प्रशंसा करवा योग्यं

होय, ए सिक्कष्ट परिलामधी रहित होय, कूर चित्र

वालो न होय, ६ इह लोक परलोकना ज्यापायी एटले कप्टभी बीहितो रहे तथा अपयशयी बीहितो रहे, ९ अशान होय परने जमे नहीं, ए दातिएयता वालो होय परनी प्रार्थना जंग करे नहीं, ए स्वजुला विकनो लजावत होय अकार्य वर्जीक होय, १० दया

वंत होय, ११ सीम्यदृष्टि वालो होय, १२ ग्रुणी जी बोनो परुवाति होय, १३ जिल धर्म कथानो उपदेश करनार होय, १४ सुशीखादि एवा अनुकूल परिवार सुक्त होय, १४ सुशीखादि वालो दीर्घद्विश होय,१६ पद्मपात रहित पणे ग्रुण दोप विशेषनो जाण होय, १७ एक पुरुषो ने परियात मितवाला तेने सेवनारो तेनी अनुजाइयें बांखनारों होय, १७ ग्रुणाधिक पुरु पनो विनय करनारों होय, १७ क्स्या ग्रुणनो जाण होय, १० निलोंजी यको पोताना मेले परापकार करे, ११ लब्धलक ते धर्मानुष्ठान व्यवहारनो लक जेने प्राप्त ययो होय, ए एकवीश ग्रुण लेमा होय ते प्राणी धर्मरूपरत्नपामवानी योग्यतावत कहेवाय ए एकवीश ग्रुण श्रावकना जाणवा॥ इति पात्रीश बोल सास॥ ॥ श्रुष श्रीखामणना बोल ॥

१ कोइपए शुज्जकार्य करता विक्षंत्र न करवो २ मतलव विना लवारी न करवी, ३ ज्ञानी थड़ने गर्व करवो नही ध वनता सुधी कमा अवश्य धारण करवी u घरनं ग्रह्म कोइने कहेनुं नही, ६ स्त्री तथा पुत्रनी कुवात कोइने कहेबी नही. 9 मित्रयी काइपण अतर राखनो नही o कुमित्रनो विश्वास न करवो ए प्रेम राखनारी स्त्रीनो पण विश्वास न करवो. रण कोइपण कार्य करतु ने विचारोने करतुं

ए प्रम राखनारा स्त्राना पण विश्वास न करवा र० कोइपण कार्य करवु ने विचारोने करवुं ११ मात, पिता,ग्रुस्तया महोटापुरुपनो विनय करवो १२ स्त्रीने ग्रुह्मनी वात कहेवी नहा ( ११ ) १३ पेट जरायाथी जोजननो संतोष न करवो, र४ विद्या जणवामां संतोष न करवो

२४ विद्या जणवामा संतोष न करेंवे १५ दान देतां श्रकलानु नहीं

१६ तरदया करवामा पाउं दृठवुं नही १९ यहण करेसी प्रतिका जंग करवी नही, १० व्यव्यायथी इत्या नपार्जन करवं नही.

१० श्रम्यायथी ५०य जेपार्जन करतुं नहीं १७ शरीरतु बल विचास्त्रा विना शुरू करतुं नहीं १० माठा कार्यथी निवर्त्ततु १९ ५ जना समये धेर्य तजबु नहीं

११ द्धं खना समय धय तजबु नहा ११ वगलानी पेरे इडियो गोपनी राखनी ११ कुक्तानी पेठे प्रपात सहुयी वहेलु छम्बु

१३ कुक्कान। पठ प्रचात सहुषा वह्सु छन्छ २४ खंगथ्। प्रमाद द्र करवा १ए निडा चेतता करवी

२६ निञ्ने चति। निष्या विचा कोहने कहेर्तुं नहीं १६ सिश्वेद कार्य पार पड्याविना कोहने कहेर्तुं नहीं १६ सासरे चलराइ धारण करवी अने सुरखाइ तजन १८ ग्रंण खेनामा प्रयत्न करवी

प्रथ नीच नरवी पण जत्तम विद्या खेवी ३० सरखा साथे श्रीत करवी ३१ क्षेशने स्थानके मौनपणुं धारण करचुं ३१ महोटा साथे वैर करवुं नही

( १३.) , २२ वेवमदेवममां, जोजनमां, विद्याजणवामां, ठ्या पारमा अने वैद्य आगल लाज करवी नही. ३४ क्षेशस्थानके उर्जु रहेवुं नहीं. ३५ श्रक्ति, ग्रुरु, ब्राह्मण्, गाय, कुमारी श्रने शास्त्रना

पुस्तक प्रदेखाने पग खगाकवा नही. ३६ घी, तेल, दहीं, दूध, प्रमुख उघामा मृकवा नही ३७ वैच, अमिहोत्री, राजा, नदी, व्यापारी वाणीयो ए पाच ज्या न होय त्या वसर्वु नही. ३० नीचथी विवाद करवो नही

इए जे यकी जीवने जोखम थाय ते बनपण वर्जवु. ४० राजुनी **खपर परा निर्देय थ**र्दु नही ४९ मूर्ख, कायर, अजिमानी, अन्यायी, अने इष्ट ए टेलाने स्यामी करवा नही धर मूर्जने हितोपदेश देवो नही,

ध३ परस्त्रीने सर्रदा वर्जनी

॥ इंडियो सर्वया वश राखवी · ४५ मूर्ख मित्र करवो नही ध६ सोजीने डब्यथी वश करवी. ४९ वती शक्तिये परनी आशा जग करवी नही. अठ ग्रुण विना मात्र आकंवरकी रीकर्नु नहीं।

( १४ ) ४ए गजा रीके तो पण विश्वास करवी नहीं, ४० एक अकर शिखवनारने पण ग्रह करी मानवीं, ५१ पाणी गढीने तथा जोड़ने पीवु ४१ प्राणाते पण सत्य बोळब्र वर्जेब्र नहीं

ए३ पोताना व्यवगुण शोधी काङ्ग्येवा १८४ राजानी स्त्री, ग्रुहनी स्त्री, मित्रनी स्त्री, साम्रु ध्यने पोतानी माता ए पाच माता जाणवी ११५ कार्य तथा सरकार विना कोइने घेर जाबु नहीं

प्ह वचनतु दारिङ राखबुंज नही प्रश्व केलवा,पुस्तक अने स्त्रो ए त्रवा कोइने आपवा नही प्रत आवक जोइने खरच करवी प्रष्ट हरएक विद्या मुखपाने राखवी

६० स्वामी प्रसन्न यथे गार्वित यत्रु नही ६१ करियाणु जोया वगर हाथो मेखवरो नही. ६१ प्रान्त्र वांधनार तथा ब्राह्मण प्रमुखने घीरचुं नही

६३ शक्ष वाधनार तथा ब्राह्मण प्रमुखन पारंचु नहा ६३ नट, विटक्षेल वेश्या, जुगारीने जधार खापंचु नही ६४ ग्रुप्त धन हेतु तो होशीयारीचीपका वदोवस्तवीहेतुं ६५ वे चार साक्षी रारवा विना धन खापंचुं नही.

६६ जधार खावेबुं धन मुदत पहेबाज आपवु ६६ जधार खावेबुं धन मुदत पहेबाज आपवु ६७ घरमा पैसा छता देवु करवु नही

( १५) ६० देवुं होय तो ते आपवाना ज्यममां रहेवुं-६७ प्रीतिवत साथे प्राये क्षेत्रक देवक करवो नही. ३० चोरेंद्री वस्तु जो मफत मखे तो पण केवी नही **४१ छराचारीने जागीदार करवी नही 3२ छांघण करवी नही ७३ खात्रीदारने किसीदार करवी 98 आ**प्युं लीधुं होय ते लखवामा आलश न करवो ध्य नवनवा ग्रमास्ता महेता (वाषोतर) करवा नही. **9६ न्यातमा नम्रता राखवी**. 99 स्त्रीने भिष्ट वचनथी वोद्याववी. 90 श्रुते पेटमां पेशी वश करवो এए सित्र पासे पण शाकी विना यापण मुकवी नही oo एकाद वे महोटानी चेखखाण श्रवस्य करवी ७९ वनता सुधी कोइनी साकी जरवी नही. ox परदेशमां केकी वस्तु सेवन करवी नही ण्ड जन्सव मूकी, गुरु अने पिताना अपमान करी ठोकराने रोवरावी, हत्या करी, तैयार धयेह न्नोजन निज्रवी, रुदन साजली, मेथुन सेवी वामीट करी, समीप आवेखो पर्व अवगणी, व ( १६ )
धनो जोजन करी एटखा वाना करी आत्महितेच्छुये परदेश जबुं नही
ए४ जे घरमा कोइ माणस न होय ते घरमा न जबुंए४ कारण विना पिताना ऊज्यनी आशा न करवी

**७५ कारण विना पिताना ऊ**र्च्यनी श्राशा न करवी **0६ परदेशमा श्राकंबर धारण करवो** 09 कोइनी बात कोइने कहेवी नहीं oo माता पितानी **आ**ज्ञा खोपवी नहीं. **ए**ए माता पितानी सेवा चाकरी मन राखी करवी. ए॰ ग्रुरु खने माता पिताना दररोज पगे दाववा एर माता पिता आगव जुटुं बोववु नही ए२ माता पिताना धर्मादिना मनोर्य पूरण करवा ए३ महोटा जाइने पिता सरिखो जाणवी ९४ ज्ञाइनी खुर्दशा दूर करवी, कुमार्गथी निवारवं ए५ रोगमा, दुष्काखमा, श्रुता चयमा, अने राज्य द्वारमा एटखे स्थानके जाइनी सहायता करवी ए६ कोइपण उत्तम कार्यमा जाइने जुखवो नही ७७ नाटककौतुक घणा जनोमा स्त्रीने जोवा देवा नही एए श्लीपासे सारी रीते सेवा कराववी ए९ स्त्रीने रात्रे वाहेर जवा देवी नही १०० स्त्री रीसाइ होय तो तरत मनावी खेवी

ि स्नीने घरता काममां इत्य व्यापी वर्ताववी

१०२ जत्तवना दिवते सगांसंवधी जुली जवां नहीं।

१०३ दुःखपामता एवा सगांसंवधीने सहाय करतुं

१०४ सगा साथे कदापि विरोध करवी नहीं।

१०५ जे घरमां एकली स्त्री होय ते घरमां जतुं नहीं।

१०६ धर्मना काममा सगार्टने जोमवाः

१०० वगांसु साता, ठीकना जककारकातां श्रने हसतां

पटले ठेकाणे मुल दावजु नहीं
रे०० डंधुं तथा चितु धुंडुं नहीं
रे०० जमता ठींक आदेतो तरत पाणी पीडुं.
११० जसे जसे पीसाव करवा नहीं
१११ जसे उसे पाणी पीडु नहीं
१११ सुती बखते ठाती पर हाथ राखवो नहीं
११३ कन्यासाराकुलमाआपवी, दुलीकुलमांनआपवी.
११४ कन्यानुं इत्य बेतुं नहीं

११५ कत्याना वरकत्याना वयथी वधारे वयनो करवी ११६ रोगी, बट, मूर्ख, दारिकी, वैरागी, कोधी अने न्हानी वयनो एटखाने कत्या आपधी नही.

न्हानी वयनी एटलान कन्या आपकी नही. १४९ महोटो पुरुप घेर आवे तो उत्ता यह सन्मान देखें.

११७ दोस्तदारी मित्राचारी, पिनतो साथ राखवी

११७ नवानवा शास्त्रवांचवानो अल्यास जायु करवोः १२० कोइपण यथ जणता श्रधरा मुकवो नही. रश्र पोताना मुखयी पोतानी प्रश्नेसा करवी नही. १११ वता पराक्रमे निरुद्यमी थवु नही १२३ कपटीना श्रामवरनी विद्यास न करवी १०४ गइ वस्तुनो झोक न करवो १२५ शत्रु होय तेना पण मरण समये समशाने जायु-रश्द शूरवीर थइने निर्वेखने हु स देवु नही १२९ श्रति कष्टे पश आस्मघात करवी नहीं। १२० हास्य करता कोइनु मर्भ प्रकाशबु नही 🔒 १०ए हास्य करता कोइ उपर क्रीध १३० वे जल विचार करता होय त्या -

१३१ पंच नाकारो करे ते काम करव १३६ माठु काम करी हुई पामब नही र३६ तपद्या करी क्षमा धारण करने **१३४ जणे**क्ष शास्त्र निरय प्रत्ये लज १३५ पुरुषे रात्रिये दर्पण जोशु नहीं १३६ सून, मैथुन निद्धाः १३७ रोटलो श्रापनो पण रहेसो १३० सर्वनी साथे चेखलाण

( १ए ) १३ए नोजन करवाने एक प्रहर पुरण न थयो होय

प्टलामां फरी जोजन करनु नहीं तेमज्देशोज न करना पनी वे प्रहर थाय के फरी जमी लेनु परंतु वे प्रहर्यी जपरांत जूल्यु रहेनुं नहीं। १४७ स्त्रीना वलाण तेना मरण पनी करवा १४१ राजा,रेव,श्रमे गुरुनी पासे खाली हाथे जनुं नहीं १४१ निर्काज स्त्री साथे हास्य न करनुं

१४३ शुज्ज कार्यमां कालविलंब न करवा १४४ तक्केषी व्यावी तरत पाणी पीवु नही १४५ व्यक्ते रात्रे जंबस्वरे गुब्धनी वाता कहेत्री नहीं १४६ नोजनमी वहे व्यने ग्रंतमां जल पीवुं

१४७ श्रजीरण थाय तो एक वे टंक जोजन वर्जवुं.
१४० हरपना समयमां शोकनी वात तज्ञवी.
१४७ कोइ कोधना धावेशथी निष्ठुरवचन श्रापणने
श्रावी कहे तो पण न्याय मार्ग मुकवो नही.

अवि कह ता पेक न्याय मार्ग भूकवा नहीं. १५० माता, पिता, ग्रस्, शेठ, स्वामी, अने राजा एटलाना अवगुण बोलवा नहीं. १५१ मूर्ल, हुछ, अनाचारी, मलीन, धर्मनी निंदा करनारों, कुशीलीयों, लोजी अने चोर एटला

नो संग क्यारे पण करवो नही.

१५३ ब्रजाएया माणसने पोनाना घरमां राखव नही १५४ अजाएया कुछ साथे सगाइ करवी नहीं. १५५ छजाएया माणसने चाकर राखवी नही १५६ पोताथी महोटा माणस उपर कोप न करवो १५७ महोटा माणस साथे क्लेश करवो नही १५० ग्रुणवान माणुस साथे वाद न करवोः १५७ दारिड ब्रावे ञागली कमाइनीइडा राखे ते मुर्ख

( Eq.) १५१ श्रजाएया माणसनी कीर्ति करवी नहीं।

१६० पोताना गुलना वखाल करे, ते मुर्ख १६१ माथे देवु करीने धर्म करे, ते मूर्ख १६२ उधारे धन आपीने मागे नहीं, ते मूर्ख १६३ सज्जन साथे विरोध करे खने पारका सीक साथे त्रीति करे ते मूर्प जाणवोः

१६४ न्याय मार्गे धन उपार्जन करवं रहए देश विरुद्ध कार्य न करवु १६६ राजाना वेरीनी संगत न करवी

१६७ घणा माणस साथे विरोध न करवो

१६७ जला पनोसीनी पासे रहेवुं

१६ए पोतानो धर्म मुकवो नहीं.

१७० पोताने आशरे रह्यो होय तेनुं हित करवुं.

(३१)
२९१ खोटा खेख खखना नहीं.
१९१ खेटा खेख खखना नहीं.
१९१ देन ग्रुस्ने निषे जिक्क राखनीं१९३ दीन श्रमे श्राविण्यो ननती सेना करवीं.
१९४ जे जाग्यमां हुशे ते मखशे एवो जरोसो राखीने
ज्यम मूकी श्रापनो नहीं
१९५ चोरीनी वस्तु लेनी नहीं।
१९६ सारी नरसी वस्तु जेली करी नेचनी नहीं
१९९ श्रापदानुं वर्जन करना राजानो श्राश्रय लेनों.

करनारने, मंत्रवादीने खने पोताना पूजनीकने पटलाने कोपाववा नहीं. १७ए नीचनी सेवा खाचरवी नहीं १०० विद्वासघात करवो नहीं. १०१ सर्व वस्तुनो नाश थतो होय तोपण पोतानी वाचा खवरय पालवी. १०२ धर्मशाखना जाण पासे वेसवु. १०३ कोइनी निंदा करवी नहीं.

्रितोपारी दांते करी जांगवी

१०४ मार्गे चासतां तंत्रोस न खावां.

१९७ तपस्वीने, कविने, वैद्यने, मर्मना जाणुने,रसोइ



